न्यूयार्क टाइम्स नं. 1 बेस्ट सेलर पुस्तक

फ्लोरेंस
नाइटिंगेल

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का नाम दुनिया भर में जाना जाता है, और हर सभ्य देश में सम्मानित किया जाता है. उनके जीवन के काम के कारण ही आज हजारों बीमार लोगों की अस्पतालों और नर्सिंग होम में, ठीक से देखभाल होती है.

फ्लोरेंस के पिता एक अमीर आदमी थे. जब बेटी का 1820 में जन्म हुआ तब माता-पिता इटली के शहर फ्लोरेंस में रह रहे थे. इसी कारण उन्हें फ्लोरेंस नाम दिया गया.

माता-पिता जल्द ही इंग्लैंड लौट आए, और फ्लोरेंस वहीँ बड़ी हुई. उसे गुड़ियों के साथ खेलने का बहुत शौक था. उसका पसंदीदा खेल यह दिखावा था कि गुड़िया बीमार है और वो उसका इलाज कर रही है.

उसने अपने पिता से इंग्लैंड में शासन के तरीके के बारे में बहुत कुछ सीखा. वो अपनी मां के साथ रोमसे नाम के छोटे शहर में बीमार लोगों से मिलने जाया करती थी. वो उनके लिए भोजन और दवाइयां लेकर जाती थी.

एक दिन फ्लोरेंस, पास के चर्च के पादरी के साथ अपने टट्टू पर यात्रा कर रही थी. जब वे खेतों के पास से गुज़रे तो उन्होंने देखा कि उनकी बगल में सड़क के किनारे एक बूढ़ा चरवाहा बैठा था और उसके साथ उसका कुत्ता कैप भी था.

चरवाहा अपने कुत्ते का बहुत शौकीन था, पर कुत्ते का एक दुर्घटना में पैर टूट गया था. अब ऐसा लग रहा था कि कैप ज़िंदा नहीं बचेगा.

जब फ्लोरेंस ने यह सुना, तो वो टट्टू से नीचे कूद गई, और पादरी के साथ मिलकर उसने कुत्ते के टूटे हुए पैर की जांच की. उन्होंने टूटे पैर को लकड़ी की ख़मचियों से बांध दिया. जल्द ही कुत्ता फिर से चलने लगा.

चरवाहे ने फ्लोरेंस का बहुत आभार माना. जब फ्लोरेंस दुनिया में सबसे प्रसिद्ध नर्स बनी, तो चरवाहा लोगों को बताता था कि फ्लोरेंस का पहला मरीज़ उसका कुत्ता, कैप था.

जब फ्लोरेंस एक युवा महिला बनी, तो गुड़ियों के प्रति उनका प्यार लोगों में दिलचस्पी और उन नई रोमांचक चीजों में बदला, जो उस समय इंग्लैंड में हो रही थीं. फ्लोरेंस के पिता हैम्पशायर के उच्च शेरिफ थे, और कई प्रसिद्ध व्यक्ति उनके घर आते थे, जिसमें लॉर्ड पामरस्टन भी शामिल थे, वो बाद में प्रधान मंत्री बने.

यह वो समय था जब इंग्लैंड एक देश के तौर पर बड़े शहरों और कारखानों में बदल रहा था. उस समय रेलवे का निर्माण हो रहा था, और टेलीग्राफ जैसे आविष्कार लोगों का जीवन बदल रहे थे.

फ्लोरेंस का मन बहुत जिज्ञासु था, और उसकी रूचि नई-नई चीजों को देखने में थी. उसने एक दिन एक अस्पताल का दौरा किया, और तब उसे अचानक एहसास हुआ कि वहां अस्पताल में बहुत कुछ नया करने की ज़रूरत थी. उनमें से कुछ वो खुद कर सकती थी.

उन दिनों सभी अस्पतालों में गंदगी होती थी और वो बहुत बुरी तरह से संचालित थे. बीमार लोगों की देखभाल कैसे की जाए उसका नर्सों को कुछ भी नहीं पता था. वैसे जो लोग अस्पताल जाते थे वे वहां से ठीक होकर जीवित बाहर आने की उम्मीद रखते थे.

उस समय नर्सिंग कोई महान पेशा नहीं था. जब फ्लोरेंस ने अपने माता-पिता को बताया कि वो एक नर्स बनना चाहती थी तो वे बहुत भयभीत हुए. उन्होंने अपनी बेटी से बहुत मना किया और उसे बहुत रोकने की कोशिश की पर उनकी शिक्षित बेटी ने उनकी एक नहीं सुनी.

वर्षों तक फ्लोरेंस ने अपने माँ-बाप को मनाने और समझाने की कोशिश की. इस बीच, उसने डॉक्टरी पर उपलब्ध सभी पुस्तकों का अध्ययन किया. और जब उसके रिश्तेदार बीमार होते तो वो उनकी नर्सिंग और देखभाल खुद करती थी. चूँकि उसके नौ चाचा और चाची थे, जिनमें से अधिकांश के बच्चे भी थे, इसलिए उनकी देखभाल करते-करते फ्लोरेंस का काफी अभ्यास हुआ.

आखिर में, जब वो तीस वर्ष की हुई, तब फ्लोरेंस ने जर्मनी और पेरिस में नर्सिंग की पढ़ाई करने के लिए अपने माता-पिता को राजी किया और फिर चार साल तक उसने जो पेशा चुना उसमें बहुत मेहनत की.

फिर कुछ ऐसा हुआ जिसने फ्लोरेंस की जिंदगी पूरी तरह से बदल डाली. क्रीमिया में युद्ध छिड़ गया.

1854 में जब क्रीमियन युद्ध शुरू हुआ तब फ्लोरेंस चौंतीस साल की थी. युद्ध में एक तरफ रूस और तुर्की थे और दूसरी तरफ इंग्लैंड और फ्रांस मदद कर रहे थे.

रूस का दक्षिणी भाग, जिसे क्रीमिया कहा जाता है, इंग्लैंड से बहुत दूरी पर था. जब ब्रिटिश सैनिकों को वहां भेजा गया, तो किसी को भी नहीं पता था कि वहां का मौसम और देश कैसा होगा. ब्रिटिश सैनिकों को वहां बहुत परेशानी का सामना करना पड़ा क्योंकि उनके पास केवल गर्मियों की वर्दी थी जो वहां की तेज़ ठंड के लिए ठीक नहीं थी. इसके अलावा, सैनिकों के लिए जो कुछ भी सामान भेजा जाता था, वो जहाजों से भेजा जाता था, जो बहुत धीमे थे, और अक्सर रास्ते में ही बर्बाद हो जाते थे.

अंग्रेजी सैनिक बहुत बहादुरी से लड़े, और जल्द ही उन्होंने पहली लड़ाई, अल्मा की लड़ाई जीती.

इस युद्ध का नाम अल्मा नदी के ऊपर पड़ा. क्रीमिया में अंग्रेजी सैनिकों के उतरने के छह दिन बाद ही वो युद्ध लड़ा गया. उन्होंने नदी को पार किया और दूसरी तरफ पहाड़ी पर चार्ज किया, जहां रूसी सैनिकों का अड्डा था. जल्द ही ब्रिटिश सैनिकों ने पहाड़ी पर कब्जा कर लिया गया और फिर रूसी सेबस्टोपोल नामक शहर में पीछे हटे.

अल्मा की लड़ाई में बड़ी संख्या में अंग्रेजी सैनिक घायल हुए. उन्हें पहले तट पर ले जाया गया, और फिर जहाज़ों से स्कूटरी के अस्पतालों में ले जाया गया.

आज युद्ध के समय घायल सैनिकों की देखभाल के लिए प्रत्येक देश में एम्बुलेंस और चिकित्सा सेवाएं उपलब्ध होती हैं. लेकिन 1854 में एंबुलेंस नहीं थीं, और घायलों को बैलगाड़ियों / घोड़ागाड़ियों में बहुत खराब सड़कों पर ले जाना पड़ता था. कई मरीज़ों की रास्ते में ही मृत्यु हो जाती थी.

इंग्लैंड के लोगों को इन चीजों के बारे में शायद कुछ भी नहीं पता चलता. पर "द टाइम्स" अखबार ने वहां एक संवाददाता भेजा था. उसने वहां सब कुछ देखा और फिर उसने अपने अखबार में अंग्रेजी घायल सैनिकों की स्थिति के बारे में लिखा. उसने लिखा, "हमारे घायल लोगों को झटके लगने वाली गाड़ियों में समुद्र सेतीन मील दूर भेजा जाता था. जबकि फ्रांस ने अपने घायल सैनिकों को बंद वैगनों में अस्पताल भेजा. फ्रांस ने अपने मरीज़ों को इंग्लैंड की तुलना में बहुत अधिक आराम से भेजा."

जब घायल सैनिक आखिर स्कूटरी पहुंचे, तो जिन अस्पतालों में उन्हें भेजा गया, वे वर्तमान के अस्पतालों की तरह नहीं थे. वे पुराने भवन थे, गंदे और व्यावहारिक रूप से ढह रहे थे, और क्योंकि वहाँ पर्याप्त बेड नहीं थे, इसलिए घायल आदमी फर्श पर पड़े थे.

अक्सर मरीज़ों के पास कोई कंबल नहीं था, और क्योंकि बहुत कम डॉक्टर थे, इसलिए इलाज से पहले ही कई जवान शहीद हो जाते थे. अगर सही ढंग से उनकी देखभाल होती तो वे जीवित रहते.

निश्चित रूप से, अंग्रेजी अस्पतालों में कोई नर्स नहीं थी, और घायल मरीज़ों को फ्रांसीसी अस्पतालों से ईर्षा होती थी क्योंकि उनके बेहतर अस्पताल थे. फ्रांसीसी अस्पतालों में नर्स भी थीं.

जिस संवाददाता ने "द टाइम्स" में बैलगाड़ियों के बारे में लिखा था उसने स्कूटरी के अस्पतालों का भी दौरा किया, और उसने वापस लिखा जिसमें उसने कहा:

"क्या हमारे बीच समर्पित और सक्षम महिलाएं नहीं हैं जो नर्सों का काम करें और हमारे बीमार सैनिकों की परवरिश करें?"

इंग्लैंड में युद्ध मंत्री सिडनी हर्बर्ट नामक एक व्यक्ति थे, और जब उन्होंने स्कूटरी में अस्पतालों की स्थिति के बारे में पढ़ा तो उन्होंने फैसला किया कि वे नर्सों को वहां भेजेंगे. वो पहले से ही फ्लोरेंस नाइटिंगेल को जानते थे. उन्होंने फ्लोरेंस को एक पत्र लिखा.

"इंग्लैंड में मुझे केवल एक ही ऐसा व्यक्ति पता है जो इस तरह की योजना को आयोजित करने में सक्षम होगा. क्या आप वहां जाकर पूरी व्यवस्था करने की चुनौती स्वीकारेंगी?"

फ्लोरेंस ने सिडनी हर्बर्ट के पत्र का इंतजार नहीं किया. उन्होंने भी स्कूटरी में अस्पतालों की स्थिति के बारे में पढ़ा था, और उसी दिन उन्होंने वहां जाने का मन बनाया. दो दिन बाद वह युद्ध कार्यालय में सिडनी हर्बर्ट से मिलने गईं.

सब व्यवस्था बड़ी जल्दी से की गई, और एक हफ्ते से भी कम समय में फ्लोरेंस को आधिकारिक रूप से स्कूटरी में अंग्रेजी अस्पतालों में भेजे जाने के लिए नर्सों का अधीक्षक नियुक्त किया गया.

उनके सामने सबसे बड़ा काम उन उपयुक्त नर्सों को ढूंढना था जो वहां जाने को तैयार थीं.

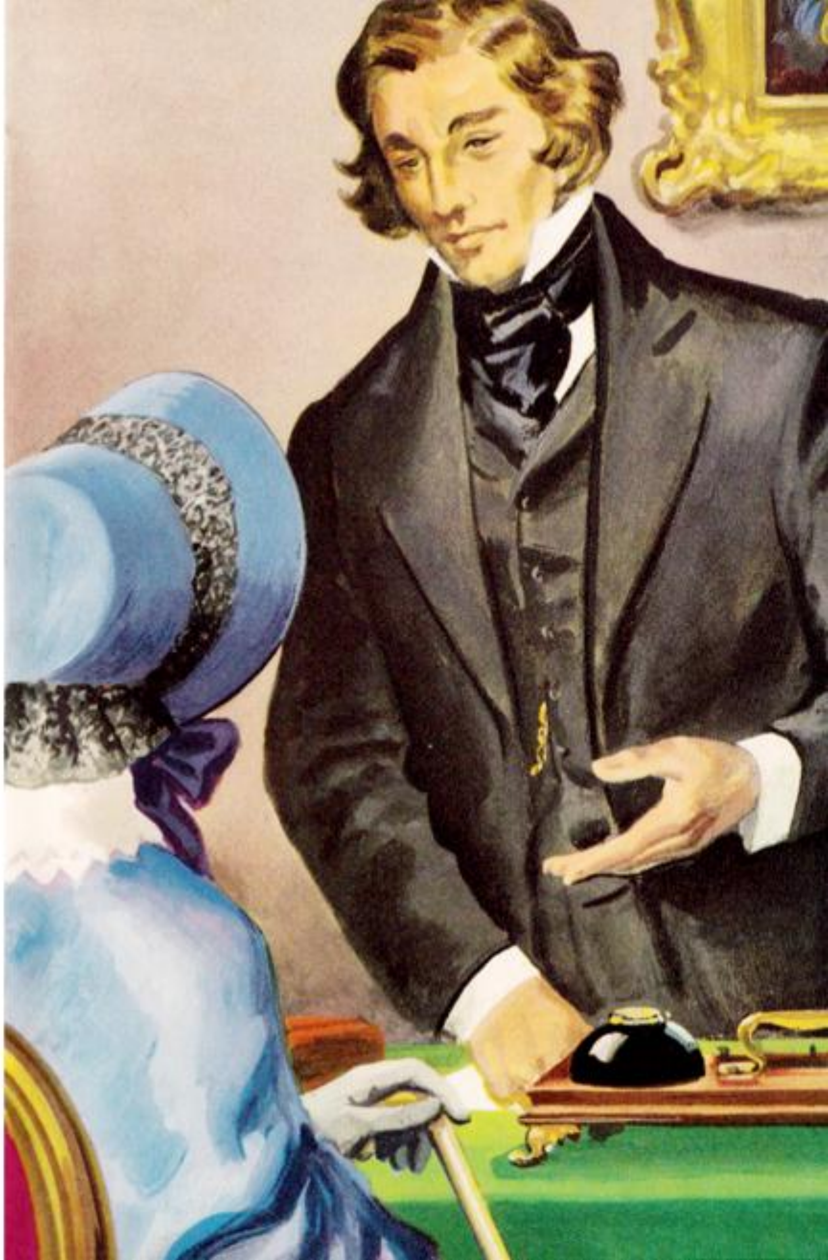

फ्लोरेंस की एक करीबी दोस्त थी श्रीमती ब्रेसब्रिज जो उनके साथ और उनकी मदद करने को तैयार हुईं. इसलिए जब फ्लोरेंस उन नर्सों को इंटरव्यू करने लगीं, तो श्रीमती ब्रेसब्रिज भी उनके साथ थीं.

लंदन में एक कार्यालय खोला गया, और जल्द ही वहाँ कई महिलायें इंटरव्यू देने के लिए आईं. फ्लोरेंस ने केवल चालीस महिलाओं को लेने का फैसला किया. भले ही सैकड़ों महिलाओं ने स्वयं सेवा की पेशकश की लेकिन सही लोगों का चयन करना बहुत मुश्किल था.

महिलाओं में से किसी को डॉक्टरी का कोई ज्ञान नहीं था और न ही उनके पास कोई प्रशिक्षण था. अन्य महिलाएं शिक्षित थीं जिन्होंने सोचा था कि घायल सैनिकों की देखभाल करना रोमांटिक होगा, लेकिन उन्हें एक सैन्य अस्पताल की चुनौतियों का कोई अंदाज़ नहीं था.

सैकड़ों महिलाओं से मिलने के बाद, फ्लोरेंस ने अंत में अड़तीस का चयन किया. अधिकांश महिलाएं धार्मिक अस्पतालों में समर्पित नर्स थीं.

फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने कोई समय बर्बाद नहीं किया. वह हमेशा स्कूटरी में पीड़ित सैनिकों के बारे में सोचती थीं. वो जानती थीं कि जितनी जल्दी वो और उनकी नर्सें वहां पहुंचेंगी, उतनी ही ज़िंदगियाँ वे बचा पाएंगी. एक सप्ताह के भीतर, फ्लोरेंस और उसकी नर्सें लंबी यात्रा के लिए जहाज पर चढ़ने के लिए तैयार थीं.

यद्यपि इंग्लैंड में कई लोगों ने सोचा कि फ्लोरेंस नाइटिंगेल बहादुर और देशभक्त दोनों थीं, अन्य लोग उन्हें तिरिस्कार की नज़र से देखते थे. उन्होंने कहा कि महिलाएं तुर्की में खराब मौसम को बर्दाश्त नहीं कर पाएंगी, और वो घायल सैनिकों की नर्सिंग करने की बजाय, खुद बीमार पड़ जाएंगी और उन्हें खुद नर्सिंग की आवश्यकता पड़ेगी.

जब बहादुर महिलाओं की इस छोटी सी पार्टी ने लंदन छोड़ा तब उनका हौसला बुलंद करने के लिए वहां कोई भीड़ नहीं थी. जब सैनिक जहाज़ पर जाते थे तो अपार भीड़ होती थी.

लेकिन फ्लोरेंस नाइटिंगेल और उनकी नर्सों ने इस बात की कोई परवाह नहीं की. उन्होंने बस अपना कर्तव्य निभाया.

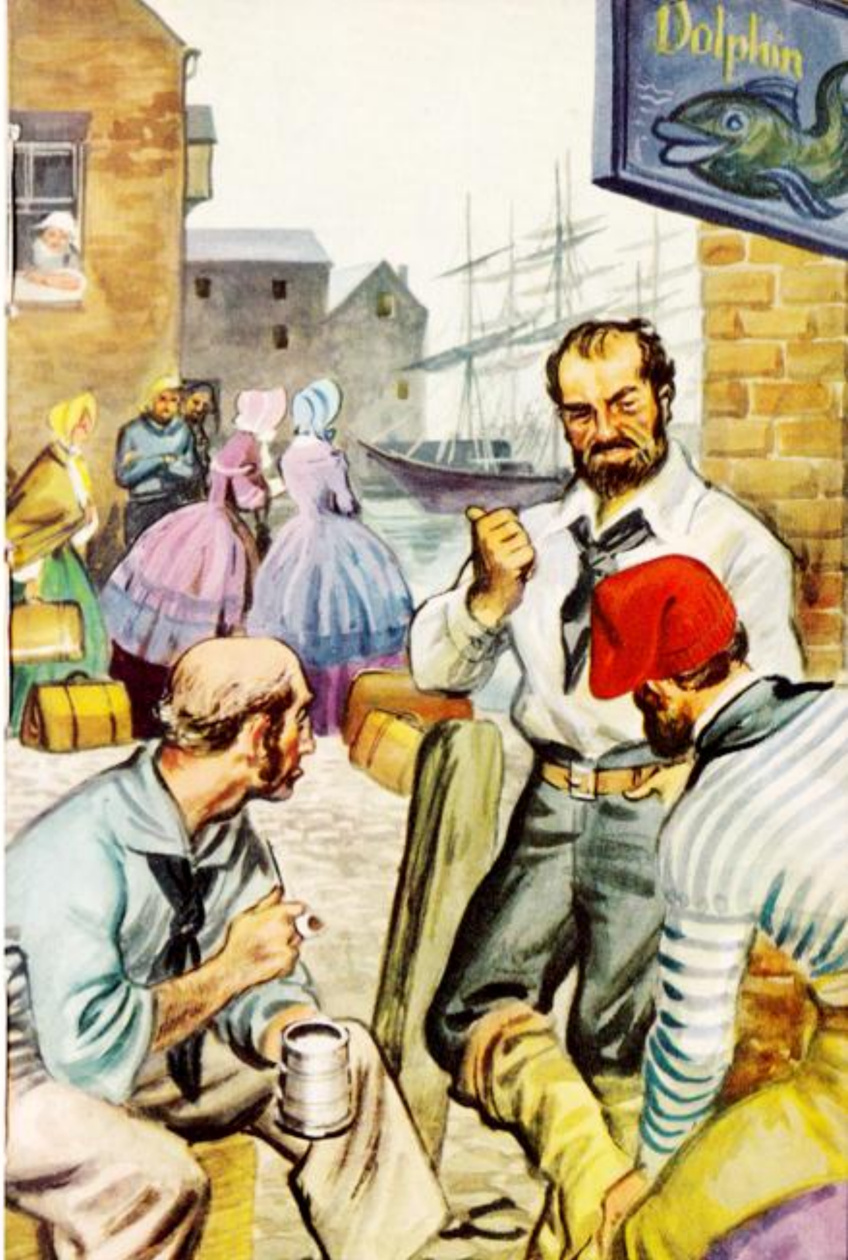

बिस्के की खाड़ी में और जिब्राल्टर के रास्ते भूमध्य सागर में यात्रा करने के बजाय, नर्सों की पार्टी फ्रांस के मार्सिले बंदरगाह पहुंची. जब वे इंग्लिश चैनल पार कर बोलोग्ने पहुंचे, तो एक शानदार स्वागत पार्टी ने उनका इंतजार किया.

फ्रांसीसी भीड़ ने उनका "हेरोइन" जैसे स्वागत किया. लोगों ने उनका सामान उठाया. वे जहां भी गए, लोगों ने उनकी जरूरत की हर चीज उन्हें मुफ्त में दी. जब वे होटल में रुके तो होटल के मालिक ने उनसे कुछ भी किराया नहीं लिया. यहां तक कि फ्रांसीसी रेलवे ने भी उन्हें मुफ्त यात्रा करने की अनुमति दी.

पर फ्लोरेंस नाइटिंगेल पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा. वो बस जल्द से जल्द स्कूटरी पहुंचना चाहती थीं. वो जानती थीं कि वहां सैनिक उनकी देखभाल के बिना मर रहे थे. फ्रांस की यात्रा समाप्त होने पर वो खुश थीं, और अब वे सभी पूर्व की यात्रा के लिए "वेक्टिस" जहाज़ पर सवार थे.

अक्टूबर के अंत में फ्लोरेंस नाइटिंगेल और उनकी नर्सों ने फ्रांस छोड़ा था, और साल के उस समय भूमध्यसागरीय में बहुत तूफ़ान आते थे. फ्रांस छोड़ने के तुरंत बाद उनका जहाज़ एक तूफ़ान में फंस गया. तूफ़ान इतना भयानक था कि जल्द ही जहाज़ के कई पालों को हवा ने फाड़ दिया. जहाज का चट्टानों से जाकर टकराने का खतरा था.

इसके अलावा, कई नर्सें समुद्र में बीमार हो गईं. अब उन्हें पछतावा हो रहा था कि वे स्वेच्छा से वहां क्यों आईं. भाग्यवश, वे माल्टा के बंदरगाह तक पहुँच पाए. वे वहां तूफान थम जाने तक रुके. फिर एक भाग्यशाली परिवर्तन से जहाज़ को अच्छा मौसम मिला और समुद्र शांत हो गया. जहाज़ ने फिर से पाल स्थापित की और यात्रा ज़ारी रखी. फिर मारसील्स छोड़ने के आठ दिन बाद वे स्कूटरी पहुंचे.

इस बीच, जबकि फ्लोरेंस और उनकी नर्सें अभी भी समुद्र में जहाज़ पर थीं, क्रीमिया में एक और लड़ाई हुई - बालाक्लाव की लड़ाई.

यह एक गाँव का नाम था जिसमें कुछ सौ तुर्क, ब्रिटिश और स्कॉटिश सैनिक थे. रूसियों ने वहां हमला किया, और केवल ब्रिटिश सेना की बहादुरी से ही वे दुश्मन को रोक सके.

"लाइट ब्रिगेड" के कारण ब्रिटिश इतिहास में बालाक्लाव का युद्ध प्रसिद्ध है. यह लगभग छह सौ घुड़सवारों का एक बल था. एक गलती के कारण इन छह सौ घुड़सवारों ने एक मील से भी ज्यादा लंबी घाटी में तब सरपट दौड़ लगाई, जब सभी तरफ से रूसी तोपें मार कर रही थीं.

उनमें से बहुत से लोग मारे गए या घायल हो गए, लेकिन वे तब तक नहीं रुके जब तक उन्होंने तोपों पर कब्ज़ा करके उन्हें पकड़ नहीं लिया.

महान अंग्रेजी कवि लॉर्ड टेनिसन ने इस प्रसिद्ध युद्ध का वर्णन करते हुए एक कविता लिखी थी.

बालाक्लाव के युद्ध में घायल सैनिक "वेक्टिस" जहाज़ से स्कूटरी में अस्पतालों में पहुंच रहे थे. लेकिन सेना के डॉक्टरों ने फ्लोरेंस नाइटिंगेल और नर्सों का स्वागत नहीं किया, वे सभी उनके खिलाफ थे.

इन पुराने सेना के डॉक्टरों को डर था कि महिलाएं अस्पताल की सभी व्यवस्थाओं को बदल देंगी. फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने जब देखा कि अस्पताल कितने गंदे और कितने बदहाल थे तब उन्होंने वही करने का फैसला किया. डॉ. जॉन हॉल वहां के प्रमुख सेना चिकित्सक थे. वो फ्लोरेंस और नर्सों को वापस इंग्लैंड जाने का आदेश तो नहीं दे सकते थे, लेकिन उन्होंने उनके सामने इतनी परेशानियां खड़ी करीं जिससे फ्लोरेंस और नर्सें खुद-ब-खुद इंग्लैंड वापिस चली जाएँ. डॉ. जॉन हॉल ने उन्हें रहने के लिए एक पुरानी, खंडहर जैसी टॉवर दी जहाँ चूहों की भरमार थी और कोई हीटिंग या फर्नीचर की व्यवस्था नहीं थी.

डॉ. हॉल को नहीं पता था कि फ्लोरेंस नाइटिंगेल एक दृढ़ प्रतिज्ञ महिला थीं. वह घायल सैनिकों की मदद करने के लिए स्कूटरी आई थीं, और उस काम में उन्हें कोई भी नहीं रोक सकता था.

अस्पताल के कमरे, जिन्हें वार्ड कहा जाता है, भयानक स्थिति में थे. यह कोई आश्चर्य नहीं था कि डॉ. हॉल नहीं चाहते थे कि इंग्लैंड की प्रशिक्षित नर्सें उन्हें देखें. वार्ड बुरी तरह से गंदे थे और घायल लोगों को संक्रामक रोगों वाले वार्डों में रखा गया था. पर्याप्त कंबल या बिस्तर नहीं थे. भोजन बुरी तरह से पकाया जाता था और खाने से पहले एकदम ठंडा होता था.

डॉ. हॉल सब कुछ करने के बावजूद, फ्लोरेंस ने नर्सों को तुरंत काम पर लगाया. उन्होंने फर्श को साफ़ किया, चादरें धोईं, और घायल लोगों को आराम पहुँचाने की कोशिश की.

सैनिक आभारी थे, लेकिन डॉक्टरों ने नर्सों का जीना हराम किया. उन्हें पता था कि अगर उन्होंने अपना कर्तव्य ठीक से निभाया होता तो नर्सों को वार्ड की सफाई नहीं करनी पड़ती. उन्हें डर था कि कहीं फ्लोरेंस अपने मित्र - युद्ध मंत्री से उनकी शिकायत न कर दें.

फ्लोरेंस बहुत व्यस्त थीं उन्हें इंग्लैंड रिपोर्ट भेजने की फुर्सत ही नहीं थी. उन्होंने वो सब किया जिससे अस्पतालों को स्वच्छ और आरामदायक बनाया जा सके.

जल्द ही एक बहुत बड़ा सुधार हुआ. गंदे फर्श और गलियारों में पड़े रहने की बजाय, अब घायल मरीज़ ठीक से कीटाणुरहित वार्डों के साफ-सुथरे बिस्तरों पर लेटे थे. इससे मरीजों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा. जैसे ही उन्हें लगा कि उनकी देखभाल की जा रही है, उनकी तबियत बेहतर होने लगी.

बहुत ही कम दिनों में, जो मरीज़ केवल मरने के गम में दुखी और निराशा थे, वे अब हंस रहे थे और खुश रहे थे.

स्कूटरी के अस्पतालों ने ब्रिटेन के नाम को बदनाम कर दिया था. पर अब, कुछ महिलाओं के समर्पित कार्य के फलस्वरूप वे उन फ्रांसीसी अस्पतालों से बेहतर थे जिनसे अंग्रेजी सैनिक ईर्ष्या करते थे.

डॉ. हॉल एक बहुत ही अप्रिय व्यक्ति थे. फ्लोरेंस ने जो कुछ भी किया था, उसके लिए फ्लोरेंस को धन्यवाद देने के बजाय, वो उससे बहुत जलते थे. सैनिकों ने देखा कि कैसे डॉक्टर ने उनकी उपेक्षा की थी. साथ ही वो फ्लोरेंस के बेहद आभारी थे क्योंकि उन्होंने उन्हें आशा और साहस दिया था.

हालांकि फ्लोरेंस नाइटिंगेल का समर्पण डॉ. हॉल का दिल जीतने में विफल रहा, पर युवा डॉक्टरों ने उस अंतर को महसूस किया. उन्होंने देखा कि घायलों की आशाओं और संभावनाओं में कितना फर्क आया था. युवा डॉक्टर अपने प्रमुख की तुलना में अधिक उदार थे.

नर्सों ने साबित कर दिया था कि इंग्लैंड के लोग गलत थे. जिन लोगों ने संदेह किया था कि नर्सें युद्ध में घायल सैनिकों के लिए उपयुक्त नहीं थीं, उनका सोच गलत था. उस दिन से महिला नर्सें हमेशा सेना का हिस्सा रही हैं, और दो विश्व युद्धों में कई हजारों घायल सैनिकों का जीवन उन्होंने बचाया.

सौ साल पहले ब्रिटिश सेना वर्तमान की सेना से बहुत अलग थी. क्रीमिया में भारत जैसे स्थानों से युद्ध के लिए सैनिकों को भेजा जाता था. वे गर्मियों की पतली वर्दी में वहां जाते थे. जो वर्दी गर्म जलवायु के लिए उपयुक्त थी. लेकिन क्रीमिया सर्दियों में बहुत ठंडा हो जाता था, और सेना ने इंग्लैंड से किसी भी गर्म कपड़े को भेजने की व्यवस्था नहीं की थी. सैनिकों को बूटों की की भी सख्त जरूरत थी, और जब उन्हें इंग्लैंड से जूतों की एक खेप आने की जानकारी मिली तो उन्हें बहुत खुशी हुई. दुर्भाग्य से, जब जूते आये तो वे सभी जूते बाएं पैर के निकले.

फ्लोरेंस ने इस स्थिति को दूर करने के लिए खुद अनेकों प्रयास किये. उसने गर्म कपड़े खरीदे और उन्हें सैनिकों में बांटा. पहले कुछ महीनों के दौरान उसने दस हजार शर्ट सैनिकों को सप्लाई कीं. ब्रिटिश सेना यह करने में असमर्थ थी.

फिर फ्लोरेंस और उनकी नर्सों ने अस्पताल का रसोई घर संभाला, और तब से घायल मरीज़ों को अच्छा गर्म भोजन, समय पर मिला.

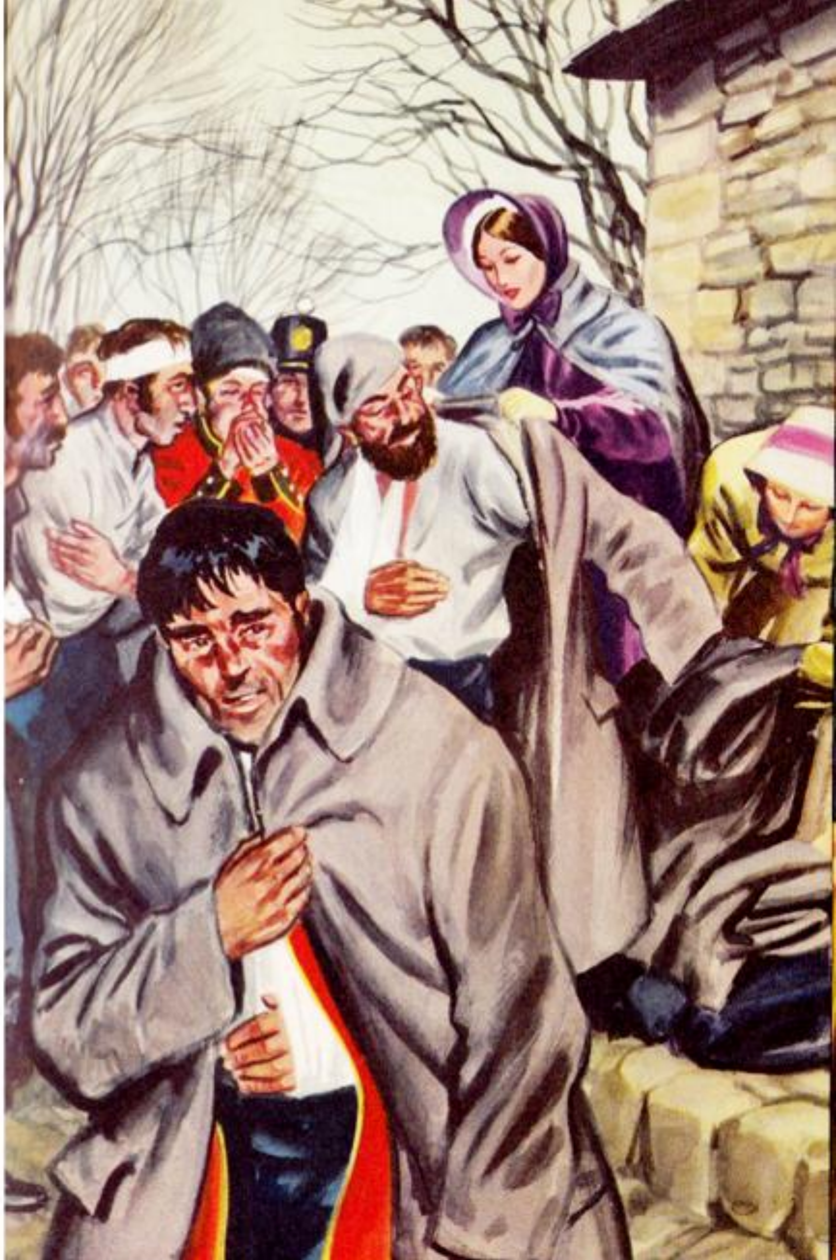

फ्लोरेंस नाइटिंगेल का नाम अब हर कोई जानता था, और उसे हर जगह उसके क्रीमिया में अद्भुत काम के लिए उन्हें सम्मानित किया जाता था. पर डॉ. हॉल हमेशा की तरह अभी भी उनसे नफरत करते थे.

वो जानते थे कि जितना अधिक लोगों को फ्लोरेंस के काम के बारे में पता चलेगा उतना ही अधिक लोगों को एहसास होगा कि उन्होंने मरीज़ों की कितना उपेक्षा की थी. डॉ. हॉल ने शिकायत की कि फ्लोरेंस अस्पतालों में सैनिकों की ज़िंदगी इतनी आसान बना रही थी कि वे अब अस्पताल छोड़ना ही नहीं चाहते थे. जबकि डॉ. हॉल अस्पतालों को इतना असुविधाजनक बनाना चाहते थे कि सैनिक लड़ाई के मैदान में जाने के लिए खुश हों.

फिर एक दिन डॉ. हॉल ने फ्लोरेंस को बुलाया और गुस्से में उसे बताया कि वो सैनिकों का बहुत नुक्सान कर रही थी, और उसे अपनी नर्सों को इंग्लैंड वापस ले जाना चाहिए. फ्लोरेंस ने डॉ. हॉल से कोई बहस नहीं की. इसके बजाय, उसने डॉ. हॉल को एक पत्र दिखाया जो महारानी विक्टोरिया ने उसके अद्भुत काम के लिए उसे लिखा था, पत्र "मिस नाइटिंगेल और उसकी महिलाओं" को धन्यवाद देता था. डॉ. हॉल के पास अब कहने को कुछ नहीं बचा था.

फ्लोरेंस ने यह सुनिश्चित किया कि हर कोई महारानी विक्टोरिया के पत्र को देखे. इसका परिणाम यह हुआ कि कोई भी फ्लोरेंस को घायल सैनिकों के लिए सही काम करने से रोक नहीं पाया.

जब एक अस्पताल सैकड़ों घायल मरीज़ों से भरा होता है, तो सभी प्रकार की पट्टियाँ और चिकित्सा के लिए दवाइयों आदि की बड़ी मात्रा में आवश्यक होती हैं. इन चीज़ों की हमेशा कमी रहती थी. और फिर एक दिन फ्लोरेंस ने पाया कि इन सभी चीजों के बड़े भंडार थे, जो डॉ. हॉल ने उसे नहीं बताए थे. डॉ. हॉल ने कहा कि उस सामान को तब तक जारी नहीं किया जा सकता जब तक कि कोई समिति उसे रिहा करने के लिए अपनी सहमति न दे.

जब फ्लोरेंस को बताया गया कि समिति अगले तीन सप्ताह तक नहीं बैठेगी, तो उसे बहुत गुस्से आया. बहुत से सैनिक मरीज़ उसके कारण पीड़ित थे.

इसलिए फ्लोरेंस और उसकी नर्सों ने डॉ. हॉल के बक्सों को खोल डाला और उससे समिति बुरी तरह से घबरा गई. समिति, फ्लोरेंस को रोकना चाहती थी लेकिन तभी उन्हें महारानी विक्टोरिया का पत्र याद आया.

हालाँकि स्कूटरी के अस्पतालों में मरीज़ों को दिया जाने वाला भोजन अब पहले से बेहतर था, फिर भी उसमें एक कमी थी. वहां हरी सब्जियां नहीं थीं, और हरी सब्जियों के बिना बीमार लोग जल्दी ठीक नहीं होते थे.

फ्लोरेंस ने फैसला किया कि जब वसंत आएगा, तब वे अस्पतालों के आसपास की बंजर भूमि में हरी सब्जियां लगाएंगे. फिर उसने दो घायल सार्जेंट को पालक और गोभी बोने के लिए जमीन को खोदने के लिए राजी किया.

जल्द ही वहां अन्य लोग भी आ गए. जब गर्म वसंत में उन्होंने सार्जेंटों को ज़मीन खोदते हुए देखा तो उन्हें यह एक महान मजाक लगा. तभी फ्लोरेंस स्वयं वहां हाज़िर हुईं. कुछ ही मिनटों में वे सभी लोग वहां पर खुदाई कर रहे थे.

डॉ. हॉल यह देखकर बहुत बेचैन थे. लेकिन उससे घायलों को हरी सब्जियां मिलीं, और उसकी वजह से वे सभी जल्दी ठीक हो गए.

फ्लोरेंस नाइटिंगेल एक ऐसी महिला थीं जो हमेशा खुद चीज़ों को देखना चाहती थीं. वह चीजों को व्यवस्थित तरीके से करने वाली एक महान प्रतिभा वाली महिला थीं. वास्तव में एक अवसर पर क्वीन विक्टोरिया ने कहा : "मुझे लगता है कि हमें फ्लोरेंस को युद्ध कार्यालय में रखना चाहिए था."

जब घायल लोग स्कूटरी में आते तब उन पर युद्ध के मैदान की गंदगी होती थी, और वे अपने घावों पर गंदे कपड़े पहने हुए होते थे. इसलिए फ्लोरेंस ने बालाक्लावा जाने और पहली पंक्ति के ड्रेसिंग स्टेशनों का निरीक्षण करने का फैसला किया. बेशक, डॉ. हॉल ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन हमेशा की तरह वो उसमें असफल रहे. इसलिए फ्लोरेंस क्रीमिया में लड़ाई के मैदान की खाइयों के पीछे सेबस्टोपोल में गईं. यहाँ उन्हें ईर्ष्यालु और अक्षम डॉक्टरों ने नहीं, बल्कि उन सैनिकों ने देखा जिनका जीवन उन्होंने बचाया था. सैनिकों को पता था कि अगर वे घायल हुए तो फ्लोरेंस और उनकी टीम उनकी देखभाल करेगी. इसलिए सैनिकों ने फ्लोरेंस का एक महारानी जैसे अभिनन्दन किया.

स्कूटरी में वापस, फ्लोरेंस ने एक बार फिर से अस्पतालों को बेहतर बनाने और घायलों की देखभाल के लिए खुद को समर्पित किया. पर अब उसके लिए उसके लिए कुछ करना पहले की अपेक्षा अधिक कठिन था क्योंकि उसके दोस्त सिडनी हर्बर्ट अब युद्ध मंत्री नहीं थे.

लेकिन उसे अब भी महारानी और सैनिकों का उसे भरपूर समर्थन हासिल था. महारानी ने उसे फिर से लिखा था, और अपने पत्र में कहा था, "मैं जानती हूं कि अपने काम में तुमने उच्च ईसाई भक्ति का प्रदर्शन किया है. तुम्हारे कार्य से मैं अच्छी तरह से वाकिफ हूं. युद्ध के दौरान मेरी प्रशंसा आपकी महान सेवाओं के लिए है, जो मेरे बहादुर सैनिकों जैसी ही है."

सैनिकों के पास फ्लोरेंस का धन्यवाद अदा करने के लिए पर्याप्त शब्द नहीं थे.

रात के घंटों में, कभी-कभी आधी रात के बाद, फ्लोरेंस शांत वार्डों का इंस्पेक्शन करती थीं यह देखने के लिए कि वहां सब कुछ ठीक था. वे अपने रास्ते को रोशन करने के लिए एक लैम्प लेकर चलती थीं. सैनिकों को उनसे इतना प्रेम और लगाव था कि वे फ्लोरेंस की छाया को चूमने की कोशिश करते थे.

क्रीमिया में फ्लोरेंस नाइटिंगेल का काम अब ख़त्म हो गया था. फिर युद्ध के अंत में वो वापिस इंग्लैंड लौटीं. दो साल पहले "वेक्टिस" में जब वो रवाना हुई थीं, तो कोई भी उन्हें देखने के लिए नहीं आया था. पर अब उनकी वापसी पर, पूरा राष्ट्र उनके सम्मान में खड़ा था. अब वो अपने काल की सबसे महान महिला के रूप में प्रतिष्ठित थीं.

उन्हें "क्रीमिया की दूत", "द लेडी ऑफ द लैम्प" आदि नामों से सम्बोधित किया जाता था. उन्हें देखने के लिए हर जगह सड़कों पर लोगों की भीड़ लगी रहती थी.

महान क्षण तब आया जब महारानी विक्टोरिया ने उनका सम्मान किया और उन्हें एक हीरे का ब्रोच भेंट किया, जिसे राजकुमार कॉन्सर्ट ने डिज़ाइन किया था, उसपर "क्रीमिया" और "धन्य हैं दयालु" शब्दों की नक्काशी थी.

फ्लोरेंस नाइटिंगेल इंग्लैंड की ही नहीं, बल्कि दुनिया की महान महिलाओं में से एक थीं. अस्पतालों और समर्पित नर्सों पर उनका अपार कर्ज है, और उनके काम ने हम सभी के जीवन को छुआ है.